झारखण्ड का जनजातीय समाज एवं उनकी समस्याएं

नीलम रूण्डा

झारखण्ड राज्य की स्थापना 15 नवम्बर 2000 ई0 को समेकित बिहार राज्य के दक्षिणी हिस्से के तत्कालीन 18 जिलों को अलग कर किया गया। इसके उत्तर में बिहार, दक्षिण में ओड़िशा, पूर्व में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में छत्तीसगढ़ स्थित है। झारखण्ड में अनुसूचित जनजातियों की आबादी 86,45,042 है जो राज्य की जनसंख्या का लगभग 26.20 प्रतिशत है। झारखण्ड में 32 प्रकार की जनजातियां हैं जो इस प्रकार हैंः—1. असुर, 2. बैगा, 3. बंजारा, 4. बाथूडी, 5. बेदिया, 6. बिंझिया,7. बिरहोर, 8. बिरजिया, 9. चेरो, 10. चीक बड़ाईक, 11. गोंड, 12. गोराइत, 13. हो, 14. करमाली, 15. खड़िया, 16. खरवार, 17. खौंड़, 18. किसान, 19. कोरा, 20. कोरवा, 21. लोहरा, 22. महली, 23, माल पहाड़िया, 24, मुण्डा, 25. उराँव, 26. परहिया, 27. संथाल, 28. सौरिया पहाड़िया, 29, सवर, 30. भूमिज, 31. कवर, 32. कोल।

झारखण्ड के जनजातीय समुदाय के बीच परिवर्तन के दौरान विभिन्न प्रतिकारकों के परिणामस्वरूप अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। सामाजिक समस्याओं का संबंध किसी व्यक्ति से न होकर ऐसी स्थिति से है जिसमें समुदाय के अधिकांश व्यक्ति बदलती हुई दशाओं के साथ समायोजन करने में असमर्थ हो जाते हैं तथा चिंता, तनाव, निराशा तथा संघर्ष का शिकार होकर असामान्य व्यवहार करने लगते हैं। झारखण्ड का जनजातीय समुदाय आज अनेक सामाजिक समस्याओं से ग्रसित है। वर्तमान समय में इन्हें निर्धनता, बेरोजगारी, भूमि—हस्तांतरण, वनदोहन, मधपान, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि की समस्याएँ व्यापक रूप से प्रभावित कर रही हैं।